Anusandhanvallari
Vol 2026, No.1
May 2026
ISSN 2229-3388

# स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती के शैक्षिक विचारों की वर्तमान परिपेक्ष्य में एक अध्ययन

**[1]Jyoti Bharti, [2]Dr. Yatendra Pal**
[1]Research Scholar
[2]Associate Professor Supervisor
Institute of Education and Research
Manglayatan University, Beswan, Aligarh

**सारांश,** अपने आरम्भिक जीवनकाल में स्वामी श्रद्धानन्द सन् 1901 में मुंशीराम विज ने अंग्रेजों द्वारा जारी शिक्षा पद्धति के स्थान पर वैदिक धर्म तथा भारतीयता की शिक्षा देने वाले संस्थान गुरुकुल की स्थापना की। हरिद्वार के कांगड़ी गांव में गुरुकुल विद्यालय खोला गया। इस समय यह मानद विश्वविद्यालय है जिसका नाम गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय है। गांधी जी उन दिनों अफ्रीका में संघर्षरत थे। महात्मा मुंशीराम विज जी ने गुरुकुल के छात्रों से 1500 रुपए एकत्रित कर गांधी जी को भेजे। गांधी जी जब अफ्रीका से भारत लौटे तो वे गुरुकुल पहुंचे तथा महात्मा मुंशीराम विज तथा राष्ट्रभक्त छात्रों के समक्ष नतमस्तक हो उठे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ही सबसे पहले उन्हे महात्मा की उपाधि से विभूषित किया और बहुत पहले यह भविष्यवाणी कर दी थी कि वे आगे चलकर बहुत महान बनेंगे। इन्होने पत्रकारिता में भी कदम रखा। वे उर्दू और हिन्दी भाषाओं में धार्मिक व सामाजिक विषयों पर लिखते थे। बाद में स्वामी दयानन्द सरस्वती का अनुसरण करते हुए इन्होंने देवनागरी लिपि में लिखे हिन्दी को प्राथमिकता दी। उनका पत्र सधर्म प्रचारक पहले उर्दू में प्रकाशित होता था और बहुत लोकप्रिय हो गया था, किन्तु बाद में उन्होने इसको उर्दू के बजाय देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी में निकालना आरम्भ किया। इससे इनको आर्थिक नुकसान भी हुआ। उन्होने दो पत्र भी प्रकाशित किये, हिन्दी में अर्जुन तथा उर्दू में तेज।

**मुख्य भाब्द,** गुरुकुल, भारतीय, शिक्षा, राष्ट्रभक्त, हिन्दी, भाषा, धार्मिक, सामाजिक आदि ।

**परिचय**, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने स्वागत समिति के अध्यक्ष के रूप में अपना भाषण हिन्दी में दिया और हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किए जाने का मार्ग प्रशस्त किया। इसी के साथ इन्होने स्वतन्त्रता आन्दोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया। गरीबों और दीन–दुखियों के उद्धार के लिये काम किया। स्त्री–शिक्षा का प्रचार

किया। सन् 1919 में स्वामी जी ने दिल्ली में जामा मस्जिद क्षेत्र में आयोजित एक विशाल सभा में भारत की स्वाधीनता के लिए प्रत्येक नागरिक को अपने मतभेद भुलाकर एकजुट होने का आह्वान किया था। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा रचित साहित्य को अनेक भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे– स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी ने पूना प्रवचन अर्थात् उपदेश मञ्जरी का मराठी से अनुवाद करवाकर उर्दू में प्रकाशित किया था। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के पत्र–व्यवहार को 1910 में सर्वप्रथम प्रकाशित किया गया था। 'आदिम सत्यार्थ प्रकाश' और 'आर्य समाज के सिद्धान्त' को सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण की समीक्षा के अंतर्गत प्रकाशित किया था। इसके अलावा स्वामी दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी 'युग–विधाता तत्त्ववेता दयानन्द', 'शास्त्रार्थ बरेली' के लेखन में सहयोग, उर्दू 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' की भूमिका, पं0 लेखराम लिखित एवं मास्टर आत्माराम अमृतसरी लिखित 'महर्षि दयानन्द जीवन चरित' की भूमिका का लेखन किया।

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी ने पं0 लेखराम के बलिदान के पश्चात् उनका जीवन चरित 'आर्य पथिक लेखराम का जीवन वृत्तांत' के नाम से लिखा। उनके लेखों का संग्रह उर्दू में 'कुल्यात आर्य मुसाफिर' के नाम से प्रकाशित करवाया। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी के अनुसार वैदिक सिद्धांतों से सम्बंधित अनेक छोटी–बड़ी पुस्तकें लिखी गई थीं, जैसे आर्य संगीतमाला, वर्ण व्यवस्था, पुराणों की नापाक तालीम से बचो, क्षत्रिय धर्म पालन का गैर–मामूली मौका, वेदानुकूल संक्षिप्त मनुस्मृति, पारसी मत और वैदिक धर्म, वेद और आर्य समाज, पंच महायज्ञों की विधि, विस्तार पूर्वक संध्या विधि, आर्यों की नित्यकर्म विधि, मानव धर्म शास्त्र तथा शासन पद्धति, यज्ञ का पहला अंग, मुक्ति–सोपान, 'सुबहे उम्मीद' उर्दू (इसका हिंदी अनुवाद 'आशा की उषा' के नाम से प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा किया गया था) इस पुस्तक में स्वामी जी ने मैक्समूलर के वेद मन्त्रों की व्याख्या की स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य से तुलना कर महर्षि के भाष्य को श्रेष्ठ सिद्ध किया था। द फ्यूचर ऑफ आर्य समाज – ए फोरकास्ट (अंग्रेजी) में आर्य समाज के भविष्य की योजनाओं पर दिये गये विचार हैं। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी के अनुसार उर्दू, हिंदी और अंग्रेजी में पत्र–पत्रिकाएं निकाली गईं, जिनके नाम हैं– सद्धर्म प्रचारक, श्रद्धा, तेज (उर्दू), लिबरेटर (अंग्रेजी) बहुत लोकप्रिय हुए।

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी के अनुसार ईसाई पक्षपात और आर्य समाज के लिए खतरे का घंटा अर्थात मुहम्मदी षडयंत्र का रहस्य भेद, हिन्दू संगठन, हिन्दू मुस्लिम इत्तेहाद की कहानी, मेरा आखिरी मश्वरा, हिन्दुओं सावधान, तुम्हारे धर्म–दुर्ग पर रात्रि में छिपकर धावा बोला गया, अंधा इतिकाद और खुफिया

जिहाद, 'द हिस्ट्री ऑफ असैसिन्स' (अंग्रेजी में इस्लाम के इतिहास से सम्बंधित पुस्तक) का अनुवाद स्वामी जी द्वारा प्रकाशित किया गया था।

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी के अनुसार 'आचार, अनाचार और छूआछात', उत्तराखण्ड की महिमा, जाति के दीनों को मत त्यागो, वर्तमान मुख्य समस्या–अछूतपन के कलंक को दूर करो, गढ़वाल में 1975 का दुर्भिक्ष और उसके निवारणार्थ गुरुकुल–दल का कार्य। वर्तमान मुख्य समस्या अछूतपन के कलंक को दूर करो। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी के अनुसार (गुरु का बाग मोर्चे में जेल के अनुभव), आर्य समाज एंड इट्स डेट्रक्टर्स विंडीकेशन (पटियाला अभियोग सम्बंद्दी) एक मांस प्रचारक महापुरुष की गुप्त लीला का प्रकाशन, आर्य समाज के खानजाद दुश्मन, सद्धर्म प्रचारक का पहला लायबल केस। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी के अनुसार वेद मन्त्रों की व्याख्या को लब्भु राम नैय्यड़ ने संकलित कर धर्मोपदेश के नाम से प्रकाशित किया था। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी के अनुसार इनके राजनीतिक जीवन से सम्बंधित महत्त्वपूर्ण लेखों का संग्रह है, जो लिबरेटर अंग्रेजी अखबार में प्रकाशित हुए थे, जिन्हें देशबंधु गुप्ता ने संकलित कर प्रकाशित किया था।

**सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन,**

**अमृत महोत्सव, गुमनाम (2024)** नायकों का विवरण, भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय, श्रद्धानंद ने महसूस किया कि कांग्रेस के मुस्लिम सदस्य अपने समुदाय पर अधिक ध्यान दे रहे थे और पार्टी में अपने लोगों के लिए अधिक प्रतिनिधित्व और नेतृत्व पाने के लिए लड़ रहे थे। उस स्थिति ने श्रद्धानंद को कांग्रेस से परे सोचने के लिए मजबूर किया, जो बढ़ती सांप्रदायिक स्थिति में हिंदू अधिकारों की रक्षा करने में विफल रही उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी और हिंदू महासभा में शामिल हो गए, जिसने हिंदू एकजुटता पर अधिक जोर दिया उन्होंने देश में हिंदू धर्म और आर्य समाज के विकास के लिए काम किया 1926 में, स्वामी श्रद्धानंद ने हिंदू–संगठन (मरती हुई जाति का उद्धारकर्ता) नामक पुस्तक लिखी।

**सरस्वती, दयानंद (2023)** भागवत मंदिर, प्रथाओं और पूजा का पुनरुद्धार, स्वामी दयानंद ने भारत की प्राचीन संस्कृतियों, धार्मिक और आध्यात्मिक प्रथाओं के संरक्षण को बढ़ावा दिया है जो कई सहस्राब्दियों से बची हुई हैं, फिर भी आधुनिक समय में समर्थन की कमी के कारण संघर्ष कर रही हैं। उन्होंने वेदों और आगमों के संरक्षण के लिए कई वेद पाठशालाएँ (वेदों के अध्ययन के केंद्र) शुरू किए हैं ताकि सीखने के लिए बुनियादी ढाँचे की कमी के कारण उनके विलुप्त होने से बचा जा सके। स्वामी दयानंद ने प्राचीन शिव

मंदिरों में 35 ओडुवरों की नियुक्ति की थी और उन्हें पन्निरु तिरुमुराई गाने के लिए मासिक भत्ता दिया था, जो शैव सिद्धांत दर्शन की व्याख्या करने वाले गीत थे।

**जयकृष्ण (2022)** वर्णम भारतीय इतिहास केरल 16 सितंबर, खिलाफत, स्वामी श्रद्धानंद और गांधी: सितंबर 1920 में कलकत्ता अधिवेशन में स्वामी श्रद्धानंद शौकत अली के साथ मंच पर थे। उन्होंने शौकत अली को अपने साथियों से यह कहते सुना।

**शोधार्थी, अर्चना. (2021)** श्री स्वामी श्रद्धानंदजी का शुद्धि आंदोलन में योगदान एक ऐतिहासिक वर्णन, द्विभाषी राष्ट्रसेवक इस शोध अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि एक समय था, जब भारतवर्ष में हिंदू सभ्यता अपने चरम पर थी और 99 प्रतिशत हिंदू थे, लेकिन कुछ वर्षों बाद मुगलों और अँग्रेजों के शासनकाल में ऐसा समय भी आया, जब हिंदू संस्कृति का ह्रास होना आरंभ हो गया और धर्म परिवर्तन के कारण हिंदुओं की संख्या उत्तरोत्तर घटने लगी। स्वामी श्रद्धानंदजी से यह स्थिति देखी नहीं गई और उन्होंने हिंदू जाति के पुनरुद्धार का बीड़ा उठा लिया तथा शुद्धि आंदोलन का सूत्र ग्रहण किया।

**शुक्ल, शंभूनाथ फ्रीलांसर (2021)** टी वी 9 भारतवर्ष के अनुसार, स्वामी श्रद्धानंद **:** अछूतोद्धार के लिए डॉक्टर अंबेडकर भी जिनके कृतज्ञ थे, स्वामी श्रद्धानंद समाप्त होती 19वीं सदी और शुरू होती 20वीं सदी के सर्वाधिक प्रतिभाशाली, तेजस्वी, प्रखर वक्ता, विद्वान और समाजसेवी थे.

**सरस्वती, स्वामी विदितात्मानंद (2015)** छात्र, मीडिया ने भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को स्वामी दयानंद सरस्वती का छात्र बताया है। स्वामी दयानंद के संन्यासी शिष्यों में स्वामी शुद्धानंद सरस्वती भी शामिल हैं, जो ऋषिकेश में स्वामी दयानंद आश्रम का संचालन करते थे, खराब स्वास्थ्य के कारण उन्होंने आश्रम का प्रबंधन स्वामी साक्षात्कृतानंद सरस्वती को सौंप दिया था। स्वामी विदितात्मानंद सरस्वती सायलोर्सबर्ग में अर्श विद्या गुरुकुलम के प्रमुख हैं।

**शोध के उद्देश्य,** स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती के भौक्षिक विचारों की वर्तमान परिपेक्ष्य में एक अध्ययन इस विषय से जुडे इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य होंगे–

- स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती के अनुसार शिक्षा गुरु, आत्म–विकास और सभी जीवों के कल्याण के बारे में सही और वास्तविक ज्ञान प्रदान करती है। शिक्षा मनुष्य में सेवा की भावना और दूसरों की मदद करने की भावना उत्पन्न करती है। इसका वर्तमान भौक्षिक परिपेक्ष्य में अध्ययन करना है।

- स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती के अनुसार शिक्षा मानव जाति के विकास के लिए एक सर्वोच्च और सबसे महत्वपूर्ण नैतिक प्रक्रिया कैसे है इसका वर्तमान भौक्षिक परिपेक्ष्य में अध्ययन करना है।
- स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती जी कहते हैं, शिक्षा के बिना व्यक्ति केवल नाम का व्यक्ति है। शिक्षा प्राप्त करना, सदाचारी बनना, द्वेष से मुक्त होना और धर्म को आगे बढ़ाना एवं लोगों की भलाई के लिए कार्य करना मनुष्य का कर्तव्य किस तरह से होता है। इसका वर्तमान भौक्षिक परिपेक्ष्य में अध्ययन करना है।

**शोध के प्रश्न,** इस भोध पत्र के मुख्य प्र न है।

- स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती ने कहा कि दूसरों को स्वीकार करना चाहिए और तब व्यक्ति मुक्त होता है. वर्तमान शैक्षिक परिपेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता का पता लगाना है।
- स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती ने कहा कि धन ईमानदारी और न्याय से कमाना चाहिए. वर्तमान शैक्षिक परिपेक्ष्य में स्वामी जी द्वारा कहीं गई बातों की प्रासंगिकता पर विस्तृत चर्चा करनी है।
- स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती ने कहा कि कोई भी मानव हृदय सहानुभूति से वंचित नहीं रहा है. इसकी विस्तृत चर्चा करनी है।

**शोध विधि,** आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद जी ने 7 अप्रैल, 1875 को बंबई (वर्तमान मुंबई) में 10 सिद्धांतों के साथ आर्य समाज की स्थापना की, जो विशुद्ध रूप से ईश्वर, आत्मा और प्रकृति पर आधारित हैं स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने आर्य समाज में रहकर कई अलग–अलग धर्मों और समुदायों की कुप्रथाओं की निंदा की, जिसमें मूर्ति पूजा, पशु बलि, तीर्थयात्रा, पुजारी शिल्प, मंदिरों में चढ़ावा, जाति, बाल विवाह, मांस खाने और महिलाओं के खिलाफ भेदभाव जैसी प्रथाएं शामिल हैं। भोधार्थिनी ने इस भोध पत्र के लिए वर्णनात्मक भोध विधि को प्रयोग किया है।

**निश्कर्श** स्वामी श्रद्धानन्द सम्बंधित साहित्य को डॉ विष्णुदत्त राकेश एवं डॉ जगदीश विद्यालंकार द्वारा संकलित कर प्रकाशित किया गया है। जैसे 'श्रुति विचार सप्तक' (वैदिक चिंतन तथा भारतीय साहित्य से सम्बंधित सात निबंध हैं) महात्मा गाँधी और गुरुकुल (स्वामी श्रद्धानन्द, गुरुकुल कांगड़ी और महात्मा गाँधी

के संबंधों का वर्णन है। स्वामी श्रद्धानन्द की सम्पादकीय टिप्पणियां (स्वामी जी द्वारा सद्धर्म प्रचारक और श्रद्धा में लिखे गए सम्पादकियों का संग्रह है) दीक्षालोक (गुरुकुल कांगड़ी में प्रदत्त दीक्षांत भाषणों एवं सारस्वत व्याख्यानों का संग्रह है) कुलपुत्र सुनें (समय समय पर गुरुकुल कांगड़ी में दिए गए भाषण और प्रकाशित लेखों का संग्रह है) स्वामी श्रद्धानन्द और उनका पत्रकार कुल (डॉ0 विष्णुदत्त राकेश द्वारा प्रभात प्रकाशन से प्रकाशित स्वामी श्रद्धानन्द और गुरुकुल कांगड़ी के पत्रकार स्नातकों के पत्रकार रूप में कार्यों का वर्णन है। आगे इस भोध में स्वामी श्रद्धानन्द जी के अन्य महत्वपूर्ण कार्य जो भारतीय ि ाक्षा, समाज, भारतीय धर्म को नई दि ाा दे रहे। इसी के साथ साथ भोधार्थिनी का पूरा प्रयास यही रहा है कि श्रद्धानन्द जी की ि ाक्षाऐं किस तरह से भारत को वि वगुरू बनने में आज मदद कर सकती हैं, इसका विस्तार के साथ उल्लेख इस भोध पत्र में भोधार्थिनी द्वारा भोध निर्दे ाक जी के पराम ि के साथ किया गया है । 19वी सदी के अन्धकारमय भारत में जिन महानुभावों ने जागृति की ज्योति जगाई उनमें दयानन्द का सन्देश बहुत व्यापक था, वे युग–प्रवर्तक थे, जिन्होंने शिक्षा, राजनीति, समाज–संगठन आदि सब क्षेत्रों में नए विचारों का संदेश दिया। उन्होने अपने समय में प्रचलित शिक्षा–पद्धति में अनेक दोष अनुभव कर प्राचीन आर्य शिक्षा–प्रणाली का प्रतिपादन किया। ऋषि ने उसे गुरुकुल शिक्षा–प्रणाली का नाम दिया।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 सरस्वती, एस.डी. (1876). ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, पृश्ठ 22
2 सरस्वती, एस.डी.(1996). भ्रान्ति निवारण, दयानन्द ग्रन्थमाला, खण्ड–2,वैदिक पुस्तकालय, अजमेर, पृश्ठ 13
3 बाब्ले, डी. (2000). आर्य समाज (वर्तमान और भावी परिप्रेक्ष्य), आर्य समाज, अजमेर पृश्ठ 23
4 शास्त्री, वी.टी.एन. (वि. 1975). आर्य समाज का इतिहास, प्रथम भाग (पं. रामजी लाल शर्मा), प्रयाग, पृश्ठ 47
5 महाजन, वी. डी. (1947). आधुनिक भारत का इतिहास, एस. चांद एण्ड कम्पनी लि., नई दिल्ली।
6 वर्मा, वी.पी. (1971). आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तक, (अनु, सत्यनारायण दुबे), लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, पृश्ठ 55
7 शर्मा, वी.एम. (2021). (सम्पादक) हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास (अष्टम भाग), प्रथम संस्करण, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृश्ठ 57
8 वर्मा, वी.पी. (1971). सत्यनारायण दुबे (अनु) आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा–3, पृश्ठ 90